Toppersnotes
Unleash the topper in you

PGT

भूगोल

EMRS/KVS/NVS/DSSSB

स्नातकोत्तर शिक्षक

भाग - 4

अधिवास, जनसँख्या, मानव, आर्थिक, परिवहन एवं प्रायोगिक भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	ग्राम्य आकारिकी	1
2	ग्रामीण अधिवासों के प्रकार	6
3	नगरों की उत्पत्ति एवं विकास	19
4	नगरीय आकारिकी	43
5	विश्व में जनसंख्या वृद्धि	52
6	जनसंख्या पिरामिड	80
7	मानव भूगोल (अर्थ, प्रकृति, विषयक्षेत्र)	84
8	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ	97
9	प्रवास	105
10	मानव विकास संकल्पना	123
11	संसाधनों का वर्गीकरण-1	127
12	संसाधनों का वर्गीकरण-2	133
13	मृदा संसाधन	139
14	जल संसाधन	158
15	खनिज संसाधन	167
16	ऊर्जा संसाधन	189
17	मानव की आर्थिक गतिविधियाँ (मानव व्यवसाय)	205
18	विश्व के प्रमुख परिवहन मार्ग	218
19	अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं व्यापारिक संगठन	252
20	भौगोलिक मानचित्र	263
21	मानचित्र प्रक्षेप	277

1 अध्याय ग्राम्य आकारिकी

ग्राम्य आकारिकी
Rural Morphology

↳ ग्रामीण अधिवासों की महत्वपूर्ण विशेषता उनकी आकारिकी होती है। अधिवास भूगोल में आकारिकी का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

↳ आकारिकी शब्द (Morphology) का अर्थ है आकारों (forms) के विषय में वार्तालाप करना।

↳ अधिवास भूगोल में आकारिकी का अर्थ-गाँव की आन्तरिक संरचना व बाह्य संरचना से है। ग्राम्य आकारिकी को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

(1) भौतिकी आकारिकी (Physical Morphology)
(2) कार्यात्मक आकारिकी (Functional Morphology)
(3) जनाकिकीय या सामाजिक आकारिकी (Demographic or Social Morphology)

(1) भौतिक आकारिकी

↳ ग्राम्य आकारिकी का सामान्य अर्थ इसके भौगोलिक आकारिकी से ही लगाया जाता है।

↳ भौतिक आकारिकी का अर्थ गाँवो की ठोस संरचना (बनावट) से है।

↳ भौतिक आकारिकी के संगठन तत्व- मार्ग, गलियां, सड़के, आवास पार्क आदि।

↳ ग्रामों की इस आकृति (बनावट) को ही ग्राम प्रतिरूप कहते हैं।

↳ आकृति के आधार पर गाँवो की आकारिकी को कई भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) आयताकार या वर्गाकार प्रतिरूप (Rectangular and square pattern)

↳ ऐसे प्रतिरूपों का विकास समतल मैदानी भागों में होता है।

↳ इन प्रतिरूपों में सड़के समकोण पर काटती है।

↳ इस प्रकार के अधिवास उत्तरी भारत, पूर्वीचीन, रूस के मैदानी भागों में देखे जा सकते है।

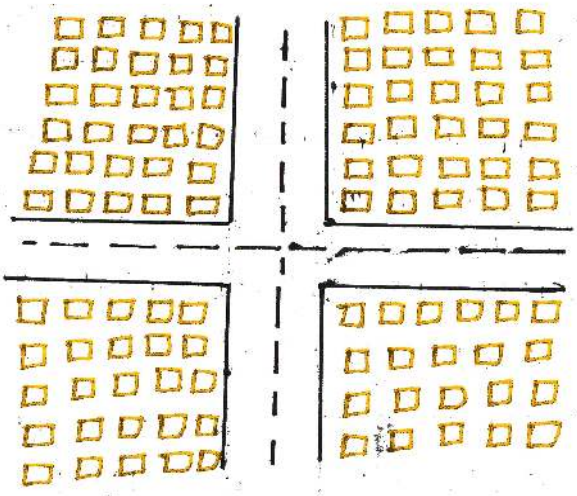

(2) रेखीय प्रतिरूप (Linear pattern)

↳ ऐसे प्रतिरूप का विकास रेलवेलाइन, नेशनल हाइवे के सहारे-सहारे होते है कभी-कभी इन अधिवासों का निर्माण नदियों के किनारो पर भी हो जाता है।

↳ ऐसे प्रतिरूप इंग्लैण्ड के हैम्पशायर, फ्रांस के लॉरेन प्रदेश, उड़ीसा के समुद्र तट, गुजरात के सौराष्ट्र, दक्षिण भारत में देखने को मिलते है।

↳ इसके अलावा ब्रह्मपुत्र, ह्वांग्हो आदि नदियों के तटबंधो पर भी ऐसे अधिवास देखे जा सकते है।

↳ यूरोप में ऐसी बस्तियों को गली ग्राम कहा जाता है।

↳ इन प्रतिरूपों को पट्टी प्रतिरूप व डोरी प्रतिरूप भी कहा जाता है।

(3) शतरंजी प्रतिरूप (Chess Board Pattern) :-

↳ इसे चौकोर पट्टी प्रतिरूप भी कहा जाता है।

↳ ऐसे प्रतिरूप समतल मैदानी भागों में देखने को मिलते है।

↳ ये आयाताकार या वर्गाकार प्रतिरूप की तरह ही होते है अन्तर केवल इतना होता है कि ये नियोजित ढंग से बसाये जाते है।

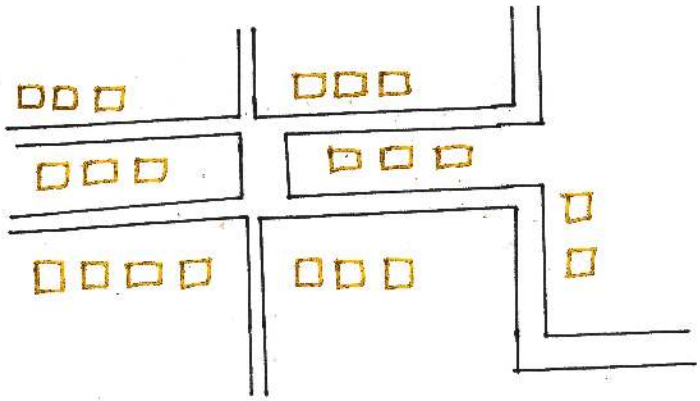

(4) वृताकार या अण्डाकार प्रतिरूप :-

↳ ऐसे अधिवास प्रतिरूपो का निर्माण किसी झील के चारों ओर, ग्रामीण मन्दिर के चारों ओर, तालाब के चारो ओर होता है।

↳ जब किसी सार्वजनिक भूमि, जमींदार या मुखिया के भवन, धार्मिक भवन आदि के चारों ओर बस्ती का निर्माण होता है तो उसे नाभिकीय ग्राम कहा जाता है।

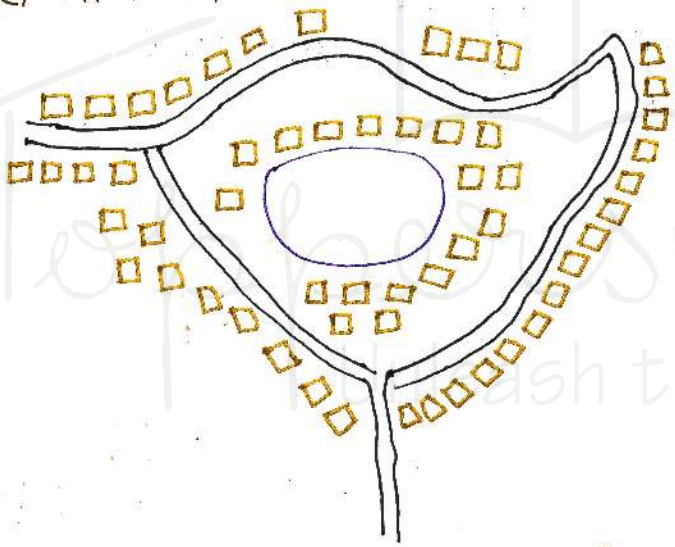

↳ जब किसी जलाशय के चारो ओर घर बनाये जाते है तब बस्ती की आकृति निहारिका के समान हो जाती है इसे निहारिकीय ग्राम कहा जाता है।

(5) अर्द्ध वृताकार प्रतिरूप (Simi Circular Pattern)

↳ इन अधिवासों का निर्माण नदी विसर्प, गोखुर झील, वृताकार जलाशय के एक ओर होता है।

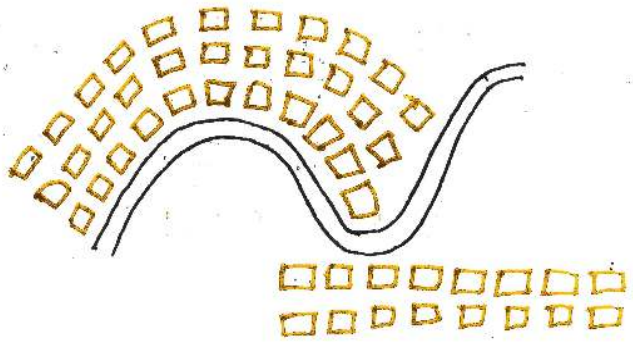

(6) त्रिभुजाकार प्रतिरूप (Triangular Pattern)

↳ ऐसे अधिवास प्रतिरूपो का निर्माण किसी स्थलीय या जलीय बाधा के कारण सड़क के एक ही ओर ग्रामीण बस्ती का विस्तार होता है तथा उस सड़क में मिलने वाली लम्बवत सड़क के किनारे भी गृह बन जाते है।

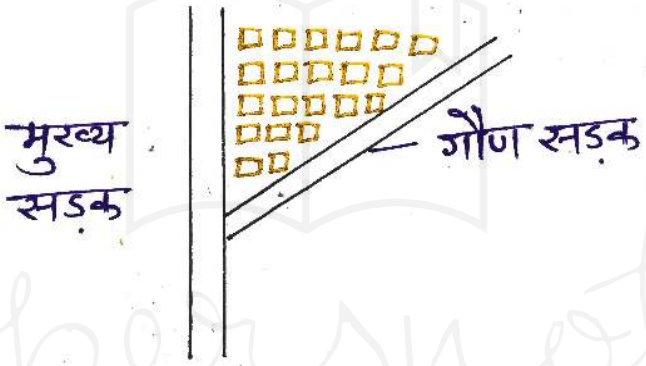

(7) सीढ़ी आकार के प्रतिरूप :-

↳ ऐसे अधिवास प्रतिरूपो का निर्माण पहाड़ी ढ़लानो पर होता है

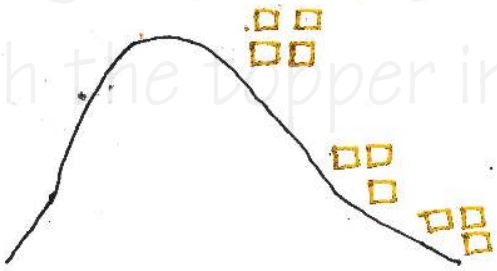

(8) अरीय प्रतिरूप (Radial Pattern)

↳ इन अधिवासो का निर्माण जहाँ मुख्य केन्द्र से चारो ओर सडके जाती हो उन सड़को के सहारे-सहारे गृहो का निर्माण हो जाता है।
↳ इसे तारा प्रतिरूप भी कहा जाता है।
↳ ऐसे प्रतिरूप उत्तरप्रदेश के बहाना व मटौना गाँव में देखने को मिलते है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

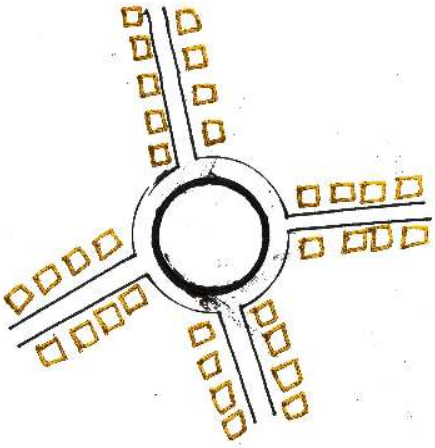

(9) टी आकार, वाई आकार प्रतिरूप ऐसे अधिवासो का निर्माण मुख्य सड़क में एक तरफ से गौण सड़क मिलने वाले क्षेत्रों में होता है।

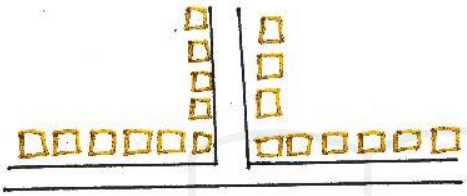

(10) पंखा प्रतिरूप :-

↳ ऐसे अधिवासों का निर्माण नदी के डेल्टाई भागों में होता है।
↳ Ex- कृष्णा, कावेरी, गोदावरी के डेल्टाई भागों में।

(11) मधुछाता प्रतिरूप :-

↳ ऐसे अधिवासों का निर्माण मधुछाता के समान होता है। इसमें एक घेरे में झोपड़ी बनी होती है जिसका मध्य भाग खुला होता है
↳ अफ्रीका में जूलू जाति के लोग ऐसे घरों का निर्माण करते है।
↳ भारत में नील गिरी पहाड़ियो में टोडा जनजाति भी निर्माण करती है।
↳ फिंचव ट्रिवार्था ने इसे शू-स्ट्रिंग प्रतिरूप कहा।

(12) अनियोजित या बेडॉल प्रतिरूप (Amorphous Pattern)

↳ ऐसे अधिवास प्रतिरूपों का कोई निश्चित आकार नहीं होता है।
↳ इन प्रतिरूपो के रास्ते (मार्ग) अनियमित होते है।

2 अध्याय ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

- ग्रामीण अधिवासों को उनकी स्थिति आकार, आकारिकी समूहन के आधार पर विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है।

→ ग्रामीण अधिवासों को मुख्य रूप से दो वर्गों में रखा जाता है -

1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास
2. एकत्रित या संघन अधिवास

1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास -

- यह ग्रामीण अधिवास का लघुत्तम रूप है।
- इस प्रकार में कहीं-कहीं एकाकी अधिवास ही देखने को मिलता है।
- इन्हे बिखरे हुए अधिवास के नाम से भी जाना जाता है।
- बड़े-बड़े खेतों में बनाये गये आवास प्रकीर्ण अधिवास के उत्कृष्ट उदाहरण होते हैं।

- प्रकीर्ण अधिवासों के आधार -

फ्रांसीस भूगोलवेत्ता स्लाश के अनुसार प्रकीर्ण अधिवासों की प्रकृति अपकेन्द्री होती है। इस प्रक्रिया में गृहों का विकेन्द्रीकरण होता है।

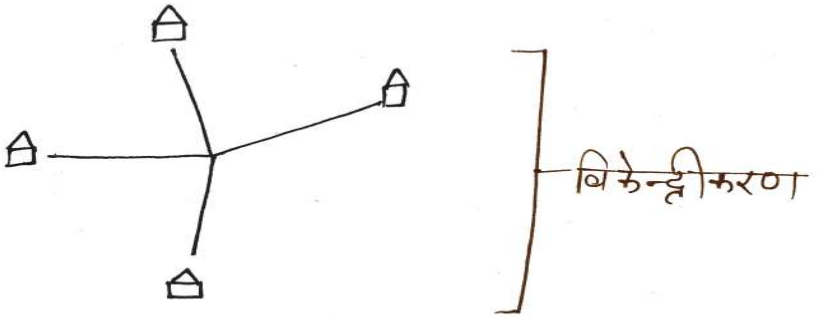

- प्रकीर्ण ग्रामीण अधिवासों के उद्भव को प्रभावित करने वाले कारक - I. प्राकृतिक कारक
II सांस्कृतिक कारक

I प्राकृतिक कारक -

प्रकीर्ण अधिवासों को देखने से स्पष्ट होता है कि ये ज्यादातर जटिल प्राकृतिक क्षेत्रों में देखे जाते हैं। जहाँ जलवायु, धरातल की बनावट, वन, जलाशय जैसे स्थानों पर क्योंकि ये मानव बसाव के लिए उपयुक्त नहीं होते हैं।

II सांस्कृतिक कारक -

अधिवासों के आकार तथा स्वरूप के निर्धारण में अनेक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

इस प्रकार जहाँ ये कारक प्रतिकूल दशा में मिलते हैं, वहाँ प्रकीर्ण अधिवास पाये जाते हैं।

→ प्रकीर्ण अधिवासों के गुण एवं दोष -

- प्रकीर्ण या बिखरे हुए अधिवासों में रहने वाले लोगों को जहाँ एक ओर लाभ प्राप्त होते हैं वही कुछ नुकसान भी होते हैं।

लाभ -

कृषक परिवार अपने खेत में ही आवास बनाने के कारण कृषि कार्यों को अधिक समय दे सकते हैं। इससे फसलों की देख-रेख भी भी आसानी से व अच्छी तरीके से होती है।

toppersnotes
Unleash the topper in you

- कृषक एकाकी आवास गृहों में रहकर संघन ग्रामों की परम्परागत कृषि प्रणाली से अलग वैज्ञानिक व नवीन खेती करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
- प्रकीर्ण अधिवास गंदगी से दूर स्वास्थ्य वर्द्धक होते हैं।

दोष –

- प्रकीर्ण अधिवासों में सामाजिक सौहार्द्र, पारस्परिक सद्भावना सहयोग व सामाजिक गुणों का विकास नहीं हो पाता।
- प्रकीर्ण अधिवास सुरक्षा की दृष्टि से अच्छे नहीं होते हैं।
- प्रकीर्ण अधिवास आधुनिक समाज से दूर रहने के कारण परम्परागत खेती पर अधिक जोर देते हैं।
- ये समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग रहते हैं।

2. एकत्रित या संघन अधिवास –

- एकत्रित या संघन अधिवास समूह के रूप में पाये जाते हैं। ये बहुत सारे आवासों का समूह होते हैं।
- इनका क्षेत्रीय आकार प्रकीर्ण अधिवासों से बहुत बड़ा होता है।
- संघन अधिवास ग्रामों के रूप में पाये जाते हैं। इनको ग्राम या गाँव के नाम से जाना जाता है।
- इन आवासों में अलग-अलग प्रकार के व्यवसाय करने वाले लोग रहते हैं लेकिन अधिकतर कृषक समाज से ही होते हैं।
- संघन अधिवासों का जीवन परस्पर सहयोग पर आधारित होता है।

→ एकत्रित या संघन अधिवासों के प्रकार –

A. संघन या पुंजित ग्राम
B. संयुक्त ग्राम
C. अपखण्डित ग्राम

A. संघन या पुंजित ग्राम –

- ये संघन बसे हुए ग्रामीण अधिवास होते हैं।
- इनके बीच में खाली भूमि होती है व बाहर खेत होते हैं।
- उत्तर भारत के मैदानों में ऐसे ग्रामों की प्रधानता है।

B. संयुक्त ग्राम –

जब कोई बड़े संघन ग्राम के बाहर लेकिन राजस्व सीमा के भीतर ही कुछ छोटे-छोटे पुरवे भी पाये जाते हैं, जिन्हें मुख्य ग्राम का ही अंग माना जाता है। ऐसे ग्रामो को संयुक्त ग्राम की संज्ञा दी जाती है।

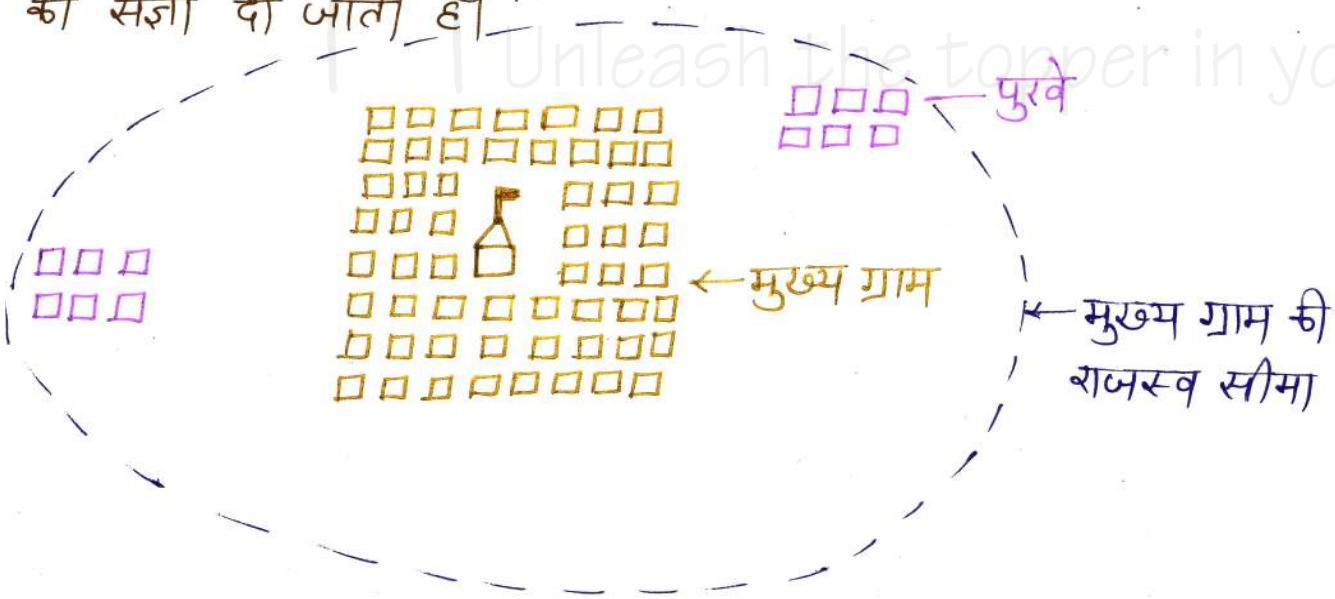

जैसे :- गंगा घाटी में ऐसे अधिवास बड़ी संख्या में देखे जा सकते हैं।

c. उपखण्डित ग्राम –

- जब एक राजस्व सीमा के अन्दर ही आवास बिखरी अवस्था में पाये जाते हैं। उनको उपखण्डित ग्राम कहा जाता है।
- ऐसे ग्रामों को अर्द्ध संघन ग्राम भी कहा जाता है।
- ये प्रकीर्ण व संघन अधिवासों के बीच संक्रमण स्थिति को दर्शाते हैं।
- इनमें केन्द्रीय स्थिति नहीं पायी जाती है।

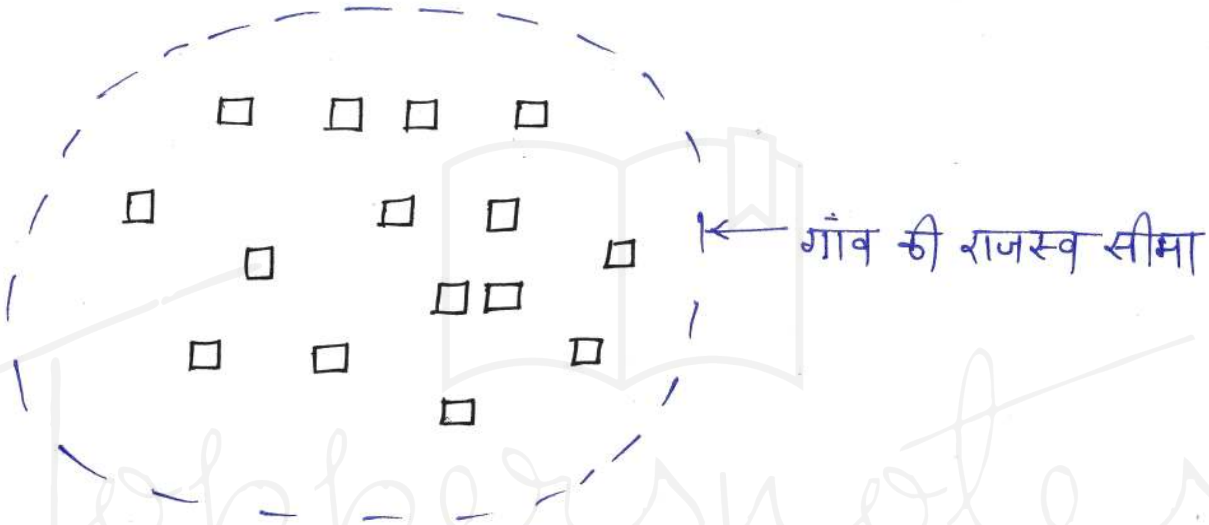

उदाहरण – ऐसे अधिवास कम उपजाऊ भूमियों, बाढ़ क्षेत्रों, उल्टाई क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं।

– एकत्रित या संघन अधिवासों के आधार –

- एकत्रित या संघन अधिवासों के भी दो आधार प्रमुख रूप से होते हैं –

1. प्राकृतिक आधार
2. सांस्कृतिक आधार

Toppersnotes Unleash the topper in you

1. प्राकृतिक आधार –

प्राकृतिक कारक हमेशा से ही मानव अधिवासों को प्रभावित करते रहे हैं।

- प्राकृतिक कारकों में निम्न तत्वों को शामिल किया जाता है।–

-जलवायु
- उपजाऊ मृदा
- जलापूर्ति
- कृषि योग्य भूमि
- उच्चावच

ये प्राकृतिक कारक जहाँ अनुकूल होंगें वहाँ सघन अधिवास देखने को मिलेंगे।

2. सांस्कृतिक आधार –

सांस्कृतिक कारक भी मानव अधिवासों को प्रभावित करते हैं।

- सांस्कृतिक कारकों में निम्न तत्वों को शामिल किया जाता है।-

-धर्म
- भाषा
- परिवेश
- राजनीतिक स्थिरता

→ एकाकित व सघन अधिवासों के गुण व दोष –

गुण–

- संघन अधिवासों में सामाजिक भावना अधिक पायी जाती है।
- संघन अधिवास सुरक्षा की दृष्टि से युक्त होते हैं।
- संघन अधिवासों में उच्च मानवीय मूल्य विकसित होते हैं।
- संघन अधिवास बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित होते हैं।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- संघन अधिवासों में मेलों, त्योहारों, उत्सवों का आयोजन सम्भव हो पाता है।

दोष –

- संघन अधिवासों के लोग खेती व पशुपालन की अच्छी देखभाल नहीं कर सकते।
- यहाँ आपस में परिवारों के झगड़े भी देखे जा सकते हैं।
- कभी - कभी ये अधिवास हिंसात्मक हो जाते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ग्रामों का विश्व वितरण

विश्व की लगभग आधी जनसंख्या 53% गाँवों में निवास करती है, लेकिन इसका वितरण विश्व में समान नहीं है। ग्रामीण जनसंख्या को दो मोटे स्तरों पर विभाजित किया जा सकता है —

A. विकासशील देश जहाँ का मुख्य आधार कृषि कार्य है। वहां ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत (%) अधिक देखा जाता है।

जैसे:- नेपाल (88%)
- थाइलैण्ड (80%)
- श्रीलंका (78%)
- तंजानिया (74%)
- भारत, म्याँमार (70%)
- चीन (64%)
- इण्डोनेशिया (63%)

B विकसित देशों में जहाँ का मुख्य आधार औद्योगिकरण व नगरीकरण हैं वहाँ ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत(%) कम देखा जाता है। जैसे:- बेल्जियम — 3%
- आइसलैण्ड — 8%
- अर्जेन्टाइना — 12%
- U.K. — 12%
- जर्मनी — 13%
- डेनमार्क — 15%
- ऑस्ट्रेलिया — 15%
- जापान — 21%
- रूस — 23%

विश्व में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण

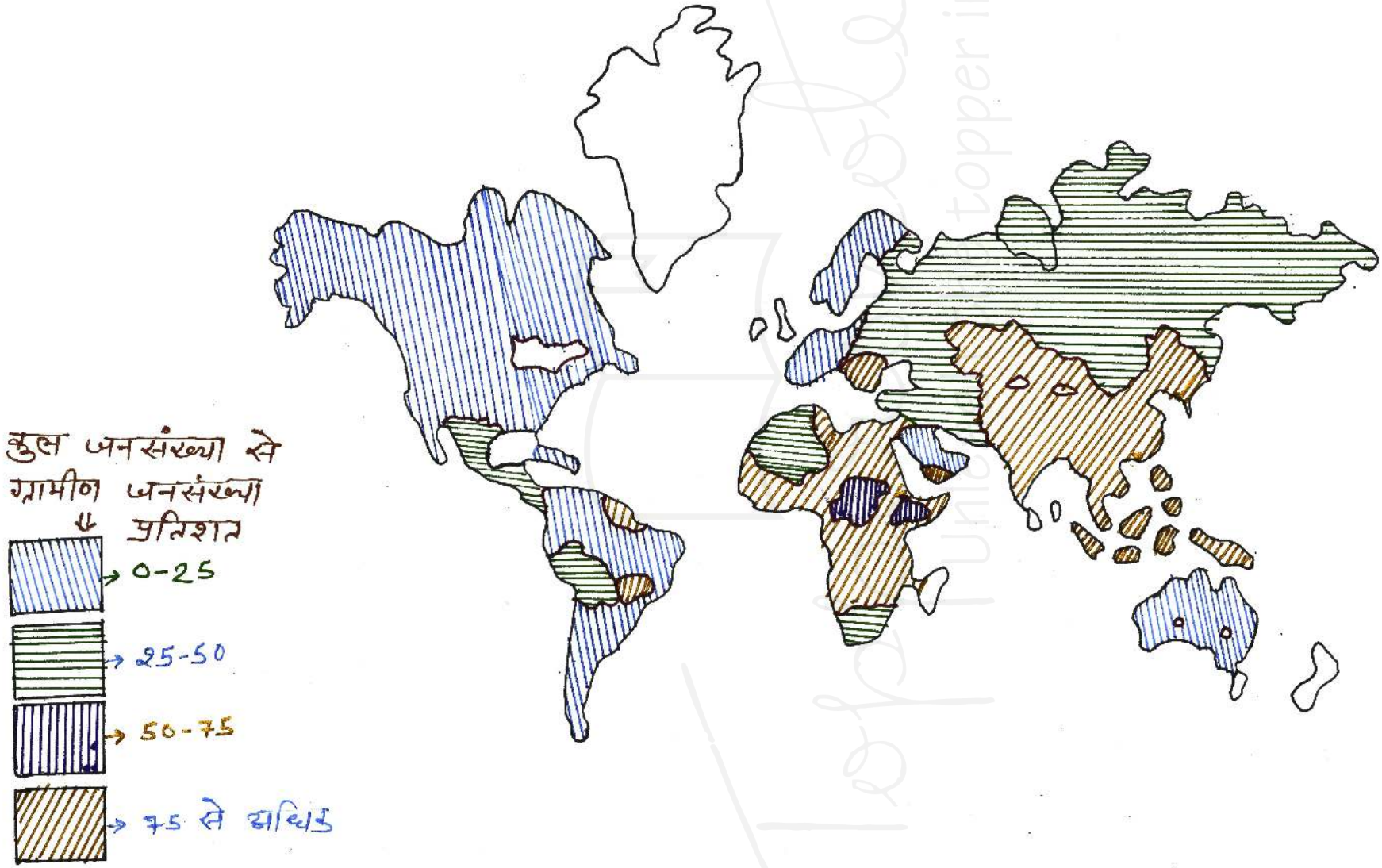

भारत में ग्रामीण अधिवासों के प्रकार

- मानसूनी प्रदेश की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है व इनका मुख्य आर्थिक आधार कृषि कार्य ही है।
- भारत की भी अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है। भारत की लगभग 70% जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है।
- जन-गणना 2011 के आधार पर भारत की 84 करोड़ जनसंख्या गाँवो में निवास करती है।
- गृहों व आवासों की संख्या इनके घनत्व व समूहन के आधार पर भारत के ग्रामीण अधिवासों को 4 वर्गो में रखा जा सकता है।
  1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास
  2. अपखण्डित अधिवास
  3. संयुक्त अधिवास
  4. संघन या सेहत अधिवास

1. प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास –

- ऐसे अधिवास लघु आकार व बिखरे हुए पाये जाते है।
- इन अधिवासो में घर, पशुशाला, गोदाम इत्यादि को शामिल किया जाता है।
- एकाकी अधिवास विषम स्थलाकृतियों वाले क्षेत्र में पाये जाते है।
- प्रकीर्ण अधिवासों के मुख्य क्षेत्र –

(i) हिमालय के दक्षिणी ढ़ालों पर – कश्मीर, हिमाचल, उत्तराखण्ड में अधिक देखे जाते है।
(ii) पूर्वी पहाड़ियों व जंगली भागों में।
(iii) मालवा के पठार पर।

(iv) पश्चिमी घाट के ढालों पर - सतारा से लेकर केरल तक
(v) पश्चिमी शुष्क मरुस्थल में।
(vi) पूर्वी उत्तरप्रदेश व बिहार के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र में।

2. अपखण्डित अधिवास -

- ऐसे अधिवासों में घर कुछ दूरियों पर बने होते हैं, लेकिन सब मिलकर एक अधिवास का रूप धारण करते हैं।
- इन अधिवासों में घर समूहों में होते है लेकिन ये समूह दूर-दूर होते हैं लेकिन एक राजस्व क्षेत्र में होते हैं।

NOTE :- R.L. सिंह ने इन अधिवासों को पुरवा युक्त अधिवास कहा

- इन अधिवासों में बसाव संघन नहीं होता है लेकिन सम्पूर्ण ग्रामवासी पारस्परिक सहयोग की भावना से ही सामुदायिक जीवन बिताते हैं। खेती के कार्यों, सामाजिक उत्सवों त्योंहारों इत्यादि में वे सहयोग की भावना रखते हैं।

क्षेत्र - गंगा - घाघरा दो आब क्षेत्र में।
- ऊपरी गंगा-यमुना क्षेत्र में।
- तराई के दक्षिण में।
- गंगा के उत्तरी भाग में (पश्चिम बंगाल)
- मध्यवर्ती भारत में (विन्ध्य क्षेत्र, सतपुड़ा क्षेत्र)

3. संयुक्त अधिवास -

संयुक्त अधिवास में आवास संघन रूप में होते हैं। इनके बीच में जगह नहीं होती है।